Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 2, Issue 8, pp 81-82, August 2025

व्यावसायिक सम्प्रेषण में हिन्दी भाषा की भूमिका

डॉ. खुशबू बाफ़ना

सहायक प्राध्यापक, भारतीय महाविद्यालय, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सारांश :–

व्यापार को सुचारू व व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए प्रभावपूर्ण संचार आवश्यक है। व्यापार में संचार हेतु भाषा व शब्दों में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है व्यावसायिक सम्प्रेषण में हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी एक आवश्यक सम्पर्क भाषा है हिन्दी भाषा के माध्यम से व्यावसायिक ग्राहक, कर्मचारी वर्ग व व्यवसाय से जुड़े लोग अधिक प्रभावी संचार कर सकते हैं।

की–वर्ड :– व्यापार, भाषा, उपभोक्ता, क्षैत्रीय, विज्ञापन।

प्रस्तावना :–

हिन्दी भाषा व्यवसाय की रूपरेखा को भारतीय संस्कृति और मूल्यों के साथ एक मजबूत सम्बंध स्थापित करने में मददगार साबित करता है। हिन्दी के माध्यम से व्यावसायिक प्रतिनिधि जब संवाद करते हैं तो उसमें लक्षित दर्शकों व ग्राहकों में उस व्यवसाय के ब्रांड व उसकी सेवा के प्रति विश्वसनीयता बढ़ जाती है। वाणिज्यिक कार्यों में हिन्दी का उपयोग करने से व्यवसाय से सम्बंधित कर्मचारियों और भागीदारों के बीच सहयोग व टीम वर्क को बढ़ावा मिलता है व साथ ही आपसी सामंजस्य बना रहता है व कई बाधाएँ जो जटिल सम्प्रेषण के कारण उत्पन्न होती है वे बाधाएँ समाप्त हो जाती है।

शोध का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य व्यायवसायिक सम्प्रेषण में हिन्दी भाषा की भूमिका का अध्ययन करना है।

शोध प्रविधि व क्षेत्र :–

शोध द्वितीयक समंकों पर आधारित है व शोध पत्र में व्याख्यात्मक रूप में हिन्दी भाषा की व्यवसाय में उपयोगिता का वर्णन किया गया है।

हिन्दी भाषा :–

मानव विज्ञानवादियों के अनुसार 'भाषा' एक सांस्कृतिक वस्तु है जिसे हम परम्परा से प्राप्त करते हैं किसी भी सांस्कृतिक उपलब्धि के समान परम्परा से प्राप्त मातृभाषा अथवा जातीय भाषा का संरक्षण करना हम सबका कर्तव्य है।

भाषा को एक सांस्कृतिक साधन कहा गया है जब तक भाषा की भिन्न–भिन्न ध्वनियों का आविष्कार नहीं हुआ था तब तक हम अपने विचारों को प्रकट करने के लिए भिन्न–भिन्न संकेतों को प्रयोग में लाते थे, जैसे– सिर को ऊपर–नीचे अथवा दायें–बायें हिलाना और नैत्रों को टेड़े–तिरछे घुमाना। परन्तु केवल आंगिक संकेतों के सहारे हम अपने सभी विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं चाहे वह अभिव्यक्ति किसी भी क्षेत्र से सम्बंधित हो जैसे– सामाजिक, व्यावसायिक आदि। इसलिए कालान्तर में भाषा का आविष्कार हुआ। मानव समाज को विधाता की और से जो सबसे बड़ा वरदान मिला है वह भाषा का ही है भाषा का महत्व एक अन्य दृष्टि से भी आंका जा सकता है वह समाज, जाति अथवा राष्ट्र उन्नत समझा जाता है जिसका साहित्य उच्च कोटी का है। हिन्दी की वाणी में भारत बोलता है, भारतीय संस्कृति बोलती है, भारत की राष्ट्र भाषा है। राष्ट्र कवि श्री रामाधारी सिंह दिनकर ने निम्न विचार व्यक्त किए –

''हिन्दी तोड़ने नहीं, जोड़ने वाली भाषा है।'' हिन्दी भाषी प्रान्तों में जनपदीय भाषाएँ अनेक है किन्तु उनसे एकाकार होकर हिन्दी ने सभी हिन्दी प्रान्तों को एक सुत्र में बांध रखा है व्यापार के अन्तर्गत उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करना एक चुनौतिपूर्ण कार्य है परन्तु यदि क्षेत्रीय भाषा में अपनी ब्राण्ड का विज्ञापन किया जाता है तो उपभोक्ता का रूझान किसी ब्राण्ड विशेष की ओर खींचा जा सकता है।

हिन्दी भाषा का व्यावसायिक प्रयोग :–

शोध अध्ययन से पता चलता है कि भारतीय क्षेत्रीय भाषा को इंटरनेट उपयोगकर्ता हर साल 18% की दर से बढ़ रहे हैं जबकि अंग्रेजी उपयोगकर्ता की 3% वृद्धि पर है इसके अलावा 90% भारतीय इंटरनेट उपयोगकर्ता क्षेत्रीय भाषा सामग्री का उपयोग करते हैं। भारतीय उपभोक्ताओं की स्थानीय ओर क्षेत्रीय भाषा सामग्री के प्रति रूचि लगातार बढ़ रही हे और 93% समय वे हिन्दी जैसे क्षेत्रीय भाषाओं में वीडियो देखने में बिताते हैं क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री के निर्माण और वितरण में तेजी से वृद्धि के कारण सामग्री उपभोग में भारी वृद्धि हुई है भाषा और मार्केटिंग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और स्थानीयकरण भारत की व्यापारिक व्यवस्था का बहुत ही अहम् भाग है यदि क्षेत्र में कोई स्थीानय भाषा वहाँ के लोगों द्वारा बोली जाती है तो उस भाषा में व्यापार के लिए संवाद करना सार्थक होता है क्योंकि वह उन लोगों को उनकी मातृभाषा का बोध कराती है।

व्यावसायिक संवाद में राजभाषा या स्थानीय भाषा का प्रयोग स्थानीय लोगों को अपनेपन का एहसास करता है। ग्राहक व्यवसायियों से जुड़ना व बात करना पसंद करते हैं। साक्षात्कार के साथ एक ग्राहक व व्यवसायी में अच्छा सम्बंध बनने की संभावना रहती है व उपभोक्ता को किसी वस्तु का क्रय करने में हिटकिचाहट महसूस नहीं होती है।

वर्तमान समय में किसी भी उद्योग, कम्पनी व व्यवसाय में विज्ञापन बिक्री करने हेतु अभिन्न अंग बन चुका है। आधुनिक तकनीकी ने विज्ञापन की व्यवसाय में एक क्रांति पैदा कर दी है। भारत में हिन्दी में विज्ञापनों का बाजार तेजी से बढ़ा है हजारों करोड़ो रूपयों का विज्ञापन का बाजार है विज्ञापन की दुनिया में कई ऐसे क्षेत्र है जिसमें लोगों को रोजगार मिलता है एवं हिन्दी को जानने वाले लोगों के लिए यह काफी हितकर साबित हो रहा है क्योंकि व्यवसाय के इस क्षेत्र में रोजगार की अनन्त सम्भावनाएँ है। समाचार चैनलों, अखबारों के अलावा भी हिन्दी के अनेक चेनल व पत्र–पत्रिकाएँ है जो व्यवासायिक क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा दे रहे हैं। ऑनलाइन हिन्दी शिक्षण के कई निजी पाठ्यक्रम स्वरोजगार की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयासों के रूप में देखे जा रहे हैं।

ऑनलाइन शॉपिंग व मार्केटिंग और विकीपीडिया के हिन्दी में लेखन सृजनात्मक संतुष्टी के साथ व्यवसायिक वित्तीय लाभ का अवसर प्रदान कर रहा है। किसी भी व्यापार या व्यक्तिगत जीवन में कुशल सम्प्रेषण उसकी ख्याति बन जाता है जो व्यापार को दिन दोगुना व रात चौगुना बढ़ाता है व लाभ का अनुपात भी बढ़ जाता है जिससे व्यवसायी की निवेश करने की क्षमता में भी वृद्धि होती है। किसी वस्तु या सेवा की उपयोगिता को ग्राहक को समझाने के लिए माध्यम वह भाषा है जो ग्राहक को आसानी से उत्पाद के बारे में समझा सके। यदि भाषा का चयन सही न हो तो कई बार ग्राहक वस्तु की उपयोगिता को समझ नहीं पाते हैं या वस्तु खरीदने के बाद उसे कैसे उपयोग में लेना है भाषा को समझने में समस्या के कारण नहीं जान पाते हैं व संवाद में व्यवधान के कारण अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अतः आवश्यक यह है कि हिन्दी भाषा जो कि राष्ट्र भाषा है व भारत देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली व समझी जाने वाली भाषा है उसी भाषा को वाणिज्यिक कार्यों में प्रयोग किया जाए।

निष्कर्ष :–

वर्तमान समय में हर 5 में से 4 व्यक्ति इंटरनेट का प्रयोग करते हैं हिन्दी के कई प्रकार के साफ्टवेयर एवं स्मार्टफोन एप्लीकेशन उपलब्ध है जिससे व्यापारिक क्रियाओं को करने में सुविधा होती है। फेसबुक, टविटर और व्हाट्सएप में हिन्दी में लिख सकते हैं। आज भारत के करोड़ो लोग हिन्दी भाषा में कम्प्युटर का प्रयोग करते हैं इसलिए हिन्दी को नई सूचना प्रोद्योगिकी की भाषा के अनुसार ढ़ाला जाए तो ये देश के विकास में अत्यंत उपयोगी साबित हो सकती है एवं इसका लाभ प्रत्येक हिन्दी भाषी को मिलेगा जिससे भारतीय संस्कृति का भी विकास होगा। अतः हिन्दी भाषा का वर्चस्व बनाए रखने हेतु सकरारी और गैर–सरकारी स्तर पर प्रयस किये जाने चाहिये।

विश्व भर में जिस तरह हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है उसी तरह हिन्दी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। केन्द्र सरकार के विभिन्न विभाग, राज्य सरकारों (हिन्दी भाषा राज्यो) के विभिन्न विभागों में हिन्दी भाषा में काम करना अनिवार्य हो गया है। शब्द स्तरीय टैगिंग के लिए साफ्टवेयर उपकरण, शब्द गणना, पत्र गणना, आवृत्ति गणना भी विकसित की गई है। विभिन्न संरचनाओं द्वारा हिन्दी में पठनीय मशीन के लगभग 30 लाख शब्द विकसित किए गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

(1) हिन्दी भाषा शिक्षण – भाई योगेन्द्र जीत

(2) वाणिज्य में हिन्दी का व्यापक प्रयोग – डॉ. दीपिका जैन '2021'

(3) व्यापार में स्थानीय भाषा का योगदान – प्रेमकुमार '2022'

(4) हिन्दी में रोजगार अवसर – डॉ. लोकेश्वर प्रमाद सिन्हा '2023'

(5) श्रंदेंजजंण्बवउ